हिलना नहीं, खिलना है...

ब्र.कु. उर्वशी बहन,नई दिल्ली

हम बड़े नशे से कहते हैं कि बनाया प्रभु ने है अपना, दिया सुख हमें है कितना। ये कोई साधारण महावाक्य नहीं है और ये महावाक्य कोई ऐसे ही बोल भी नहीं सकता। तो वास्तव में हम कितने भाग्यवान ठहरे ना! देखो बिगड़ी को बनाने वाला अपना हो गया है तो फिर तो कोई हमारा कुछ बिगाड़ भी नहीं सकता है। फिर क्यों ये अजीब-सा डर, ये भय, ये चिंता? अरे! फिर परमात्म प्राप्ति का आपने

लाभ ही क्या लिया? आप पहले भी डरते थे, भयभीत होते थे, चिंतित रहते थे और आज भी यही सब है आपके जीवन में, कभी बीते कल की फिक्र,तो कभी आने वाले की। अरे! आप स्वयं ही सब कर लेंगे या कुछ भगवान के लिए भी छोड़ेंगे। बहुत बार ब्राह्मण आत्माओं के परिस्थिति आने पर पसीने छूट जाते हैं। उनका ये कहना है कि हम बाबा के बन गए फिर इतनी सब समस्यां हमारे सामने क्यों? अरे! मीठी आत्माओं आप ये क्यों भूल जाती हो कि जितना बड़ा तूफान होगा वो उतना ही बड़ा तोहफा लाएगा! हकीकत तो ये है कि परिस्थितियां कभी हमें कमज़ोर नहीं बल्कि ताकतवर बनाने आती हैं। और बाबा ने तो ये कभी नहीं कहा कि बच्चे, तुम्हारे सामने कभी पेपर नहीं आएंगे। बल्कि बाबा ने ये कहा है कि आने वाला समय बहुत भयानक होगा, चारों तरफ हाहाकार होगा, हर तरफ से पेपर आएंगे, क्योंकि ये समय ही हिसाब-किताब चुक्तू करने का है। अब बहुत आत्माएं हार्ट फेल हो जाती हैं बाबा के ये महावाक्य सुनकर, परन्तु वे ये क्यों नहीं याद रखती कि बाबा ने ये भी कहा है कि अंत समय में आपको मदद भी 100 गुना मिलेगी। 100 गुना मदद लेने की चाबी है हिम्मत, ये बात हमें अंडरलाइन करनी होगी। बाबा का ही महावाक्य है कि हिम्मते शक्तियां, मदद दे सर्वशक्तिवान। अब बाबा ने कहा कि हिम्मत का कदम पहले आपका फिर पदम गुणा मदद बाप की। नो हिम्मत, नो मदद। फिर चाहे आप कितने ही वर्ष पुराने क्यों ना हों। बिना हिम्मत के आज तक कोई भी व्यक्ति कोई जंग नहीं जीता है। इसलिए दिलशिकस्त होने के बजाय आओ हम एक कदम हिम्मत का उठाकर बाबा की मदद के पात्र बनें क्योंकि-

ये राहें ले ही जायेंगी मंज़िल तक हौसला रखो,
कभी सुना है कि अँधेरे ने सवेरा होने न दिया!

इसलिए मीठे भाइयों-बहनों ऐसे हारो न हिम्मत। देखो बाबा के बच्चे हारेंगे तो जीतेगा कौन! रावण? सुना है क्या आपने पहले कभी कि भगवान की हार हुई और रावण की जीत हुई? और क्या महाभारत में भी कौरव जीते थे? भगवान की हार माना उनके बच्चों की हार, रावण की जीत माना बुराई, कमी, कमज़ोरी की जीत। हे प्यारी-मीठी आत्माओं, आप तो कल्प वृक्ष की जड़ हो, आप हिल जाओगे तो ये वृक्ष तो पूरा ही हिल जाएगा, इस वृक्ष की हर एक आत्मा हलचल में आ जाएगी, उन सभी आत्माओं की सोचो, उन आत्माओं के पास तो बाबा भी नहीं है (माना उनको, बाबा की मदद की अनुभूति नहीं है) फिर उन आत्माओं को हिम्मत कौन देगा, उन सभी में बल कौन भरेगा? क्योंकि जब जड़ ही कमज़ोर होगी तो वृक्ष मजबूत कैसे होगा? कभी ऐसा तो नहीं देखा ना कि जड़ कमज़ोर है और वृक्ष मजबूत! इसलिए चिंतन करो इस महावाक्य पर कि तुम इस कल्प वृक्ष की जड़ में बैठी देव आत्माएं हो, तुम विचलित होंगे तो ये पूरा ही कल्प वृक्ष विचलित होगा। सोचो यह पूरा कल्प वृक्ष हम बच्चों पर आधारित है, उन सभी आत्माओं के दुःख, अशांति का कारण भला हम क्यों बनें! नहीं, बल्कि भगवान ने हमें, उन सभी आत्माओं की सेवा के निमित्त चुना है इसलिए आज से हम ये प्रतिज्ञा करते हैं कि ना तो हम स्वयं हिलेंगे(चिंतन, दुःखी, अशांत, परेशान) और ना ही हम उनको हिलाएंगे माना उनके दुःखों का कारण बनेंगे बल्कि हम तो उनका निवारण बनेंगे। हम हिलेंगे नहीं, हम तो खिलेंगे। हिलना अर्थात् हारना, खिलना अर्थात् खेलना(परिस्थितिओं से)।

याद रखें-

जो हिलता है, वो खिलता नहीं,
जो खिलता है, वो हिलता नहीं।

कादमा-हरियाणा। मंडल जिला बनाओ संगठन एवं किसान क्लब तिवाला के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित 'स्वैच्छिक रक्तदान शिविर' में सरपंच अनिल कुमार, पुस्तकालय प्रबंधक राजवीर सिंह, नित्यानंद, किसान क्लब अध्यक्ष सतपाल, सविच अशोक कुमार, मंडल जिला बनाओ संगठन युवा विंग के अध्यक्ष,एडवोकेट अनिल साहू, पवन पंघाल, मास्टर सुनील कुमार आदि को प्रमाण पत्र भेंट कर सम्मानित करते हुए ब्र.कु.वसुधा दीदी।

प्रतापगढ़-राज.। अतंर्महाविद्यालयी वालीबॉल एवं बेडमिंटन प्रतियोगिता में 'सकारात्मक विचार, नैतिक मूल्यों से सशक्त युवा' विषय पर सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. भगवान भाई। मंचासीन हैं पुलिस उपनिरीक्षक ओमप्रकाश विशनोई, अतिरिक्त जिला कलेक्टर शर्मा जी, प्रिंसिपल संजय जील, ब्र.कु. मीना बहन सहित अन्य गणमान्य मौजूद रहे।

लखनऊ-त्रिपाठी नगर(उ.प्र.) गुलज़ार उपवन में आत्मनिर्भर किसान अभियान के समापन समारोह में मंचासीन हैं डॉ.राजनीश दुबे,अपर मुख्य सचिव,उ.प्र.शासन, बद्री विशाल तिवारी सहायक निदेशक कृषि विभाग, वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्र.कु.राधा बहन, ब्र.कु.इंद्रा बहन तथा ब्र.कु. मंजू बहन।

विश्व कल्याण के कर्णधारों को हृदय से श्रद्धासुमन अर्पित

शांतिवन। बापदादा व दीदी-दादी के अति लाडले, यज्ञ के वफादार, सर्व के स्नेही, शांतिवन की स्थापना के निमित्त तथा प्रबंधक, दिन-रात बाबा की सेवाओं को, यज्ञ को विस्तार रूप देने व सदा उसी चिंतन में रह उसकी सम्भाल करने वाले हम सबके अति प्रिय भूपाल भाई जो 51 वर्षों से समर्पित रूप से अथक बन मधुबन बेहद यज्ञ में अनेकानेक सेवाएं देते रहे। शांतिवन, मनमोहिनीवन परिसर, सोलर पार्क, मानसरोवर तथा बघेरी आदि के स्थानों को खरीदने में आपका पूरा योगदान था। मुख्यालय के समीप राजस्थान के अनेक सेवाकेन्द्रों के निर्माण में भी आपने पूरा सहयोग दिया। कुछ समय से आपका स्वास्थ्य ठीक नहीं था। अतः दिनांक 20 दिसम्बर 2022 को सवेरे 9 बजे ट्रॉमा सेंटर में अपना पुराना शरीर छोड़ आप बापदादा की गोद में

बापदादा को गुलदस्ता भेंट करते हुए राजयोगी ब्र.कु. भूपाल भाई जी

चले गये। 21 दिसम्बर सुबह शांतिवन, आनंद सरोवर, मनमोहिनीवन आदि स्थानों की परिक्रमा के पश्चात् ज्ञानसरोवर, पांडव भवन के चारों धामों की यात्रा कराने के पश्चात् नदी के पास बने मुक्तिधाम में अंतिम संस्कार के साथ उन्हें अंतिम विदाई दी गई। ऐसी अथक सेवाधारी, यज्ञ की वफादार, ईमानदार आत्मा को पूरा ब्राह्मण परिवार अपनी स्नेह भावांजलि अर्पित करता है।

रायपुर-छ.ग.। **प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के इंदौर ज़ोन की क्षेत्रीय निदेशिका राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी कमला दीदी की संस्थान की सेवाओं को छत्तीसगढ़** में विस्तारित करने में अहम भूमिका रही। माउण्ट आबू के बाहर संस्थान के प्रथम रिट्रीट सेंटर के रूप में शान्ति सरोवर का निर्माण उनके ही अथक परिश्रम से संभव हो सका। वर्तमान समय इंदौर ज़ोन की क्षेत्रीय निदेशिका के रूप में छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश के साथ ही समीपवर्ती राजस्थान और ओडिशा के कुछ सेवाकेन्द्रों का प्रशासन भी वे देख रही थीं। वे इस संस्थान के एजुकेशनल सोसायटी एवं राजयोगा एजुकेशन एंड रिसर्च फाउण्डेशन की गवर्निंग बोर्ड की सदस्या होने के साथ ही सुरक्षा सेवा प्रभाग की नेशनल कोऑर्डिनेटर भी थीं।

कमला दीदी की सामाजिक सेवाओं को देखते हुए वर्ष 1997 में मध्य प्रदेश के तत्कालीन राज्यपाल मोहम्मद शफी कुरैशी ने 'सेठ नेमीचन्द श्रीश्रीमाल समाजसेवा अभिनंदन अवॉर्ड' प्रदान कर सम्मानित किया। इसके अलावा वर्ष 2009 में तत्कालीन मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह द्वारा 'स्त्री शक्ति सम्मान' प्रदान कर सम्मानित किया गया था।

राजयोगिनी ब्र.कु. कमला दीदी के दिल में आदिवासियों के प्रति भी बहुत दया-भावना थी। उनके मार्गदर्शन में 15 मई 1987 से बस्तर अंचल के 65 ग्रामों में अध्यात्म के द्वारा आदिवासियों के जीवन को संवारने-सुधारने का कार्य किया जा रहा है। उनकी उम्र 81 वर्ष थी। पिछले कुछ दिनों से उनकी तबियत ठीक न होने के कारण रायपुर के एक निजी अस्पताल में इलाज चल रहा था। 10 दिसम्बर 2022 को उन्होंने अपना पुराना शरीर छोड़ बापदादा की गोद ली। 11 दिसम्बर को उनके पार्थिव देह का अंतिम संस्कार शांति सरोवर रिट्रीट सेंटर में ही किया गया। ऐसी अथक, प्रेमस्वरूप, त्यागमयी महान आत्मा को सारा ब्राह्मण परिवार सहृदय भावांजलि अर्पित करता है।

माउण्ट आबू-म्यूज़ियम। **प्यारे बापदादा की अति लाडली, सेवाओं में सदा अथक बन 'हाँ जी' का पार्ट बजाने वाली, आबू के आध्यात्मिक संग्रहालय में सेवारत, हम सबकी अति स्नेही राजयोगिनी ब्र.कु. प्रतिभा बहन** ने 1969 में मुम्बई कांदीवली से ज्ञान प्राप्त किया था। 1972 में उनका आबू में सेवा पर आईं और आध्यात्मिक संग्रहालय में बहुत उमंग-उत्साह से अपनी सेवायें देती रहीं। कुछ समय से उनका स्वास्थ्य ठीक नहीं था इसलिए ग्लोबल अस्पताल में स्वास्थ्य लाभ ले रही थीं। 22 दिसम्बर 2022 की शाम को उन्होंने अपने पुराने शरीर का त्याग कर बापदादा की गोद ली। 23 दिसम्बर को उनके पार्थिव शरीर को ज्ञानसरोवर, मधुबन पांडव भवन के चारों धामों की यात्रा कराने के पश्चात् आध्यात्मिक संग्रहालय होते हुए मुक्तिधाम में उन्हें अंतिम विदाई दी गई। ऐसी स्नेही सर्विसेबल, सबकी दुआएं लेने वाली महान आत्मा को पूरा ब्राह्मण परिवार अपनी स्नेह श्रद्धांजलि अर्पित करता है।